डॉ. भीमराव अम्बेडकर शोधपीठ
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

एम.बी.एस मार्ग, कबीर सर्किल के पास, कोटा – 324005

(13/04/2018)

रिपोर्ट

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर शोध पीठ के तत्वाधान में अम्बेडकर जी की 127वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यक्रम में निबन्ध प्रतियोगिता व सेमिनार का आयोजन हुआ। दिनांक 12.04.2018(गुरूवार) को "डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का सामाजिक उत्थान में योगदान" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई । तथा आज दिनांक 13.04.2018 को "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रासंगिकता" विषय पर सेमिनार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. दुर्गाप्रसाद जी अग्रवाल तथा मुख्य वक्ता श्री तुलसीराम जी एवं वक्ता कुलसचिव महोदय डॉ. संदीप सिंह चौहान रहे तथा अध्यक्षता कुलपति महोदय प्रो. पी.के. दशोरा ने की।

कार्यक्रम का आरम्भ माता सरस्वती के समक्ष दीप–प्रज्वलित करके किया गया। इसके पश्चात् कोटा विश्वविद्यालय, कोटा का कुलगीत एवं वन्दे मातरम् गायन हुआ। सभी अतिथियों का श्रीफल एवं उपरणा द्वारा स्वागत किया गया।

स्वागत भाषण एवं कार्यक्रम का परिचय छात्र कल्याण प्रकोष्ठ एवं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर शोध पीठ की समन्वयक प्रो. रीना दाधीच ने दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय में स्थापित डॉ. बी.आर. अम्बेडकर शोध पीठ द्वारा किये जा रहे कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया।

कुलसचिव महोदय डॉ. संदीप सिंह चौहान ने वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहेब ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत के सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था एवं वे कबीरपंथी थे। उन्होंने न केवल दलितों का वरन् उन सभी वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया जो किसी न किसी रूप में सामाजिक प्रताड़ना का सामना करने को विवश थे। वे आजीवन जातिगत एवं धर्मगत वर्ण व्यवस्था को पुनर्भाषित करने का प्रयास करते रहे। वे इस राष्ट्र एवं हिन्दुत्व के सबसे बड़े हितेषी थे। डॉ. संदीप जी ने उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि प्रो. दुर्गाप्रसाद जी ने "डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जी एवं शिक्षा" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जो देश–समाज अपने महापुरुषों का ध्यान एवं चिंतन करता है वही देश–समाज जीवित है। बाबा साहेब का सोचना था कि सभी को नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने बचपन से अनेकों कठिनाइयों एवं अस्पृश्यता का सामना करते हुए भी उच्चतम शिक्षा प्राप्त की एवं समाज को शिक्षित करने का आजीवन प्रयास किया। वे सम्पूर्ण मानव जाति के नेता के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे। अम्बेडकर जी ने समस्त समाज को एक सूत्र में बाँधने का स्वप्न देखा था।

मुख्य वक्ता श्री तुलसी नारायण जी ने "डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की सामाजिक समरसता" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि अम्बेडकर जी उनका मूलमंत्र था– शिक्षित

बनो, संगठित रहो व संघर्ष करो। वे स्वतंत्रता, समता और बंधुता के पक्षधर थे। उनका मत था कि समाज में स्वतंत्रता व समता तभी हो सकती है जब आपस मे बंधुत्व का भाव हो। बाबा साहेब के समय की परिस्थितियों एवं घटनाओं को आज के संदर्भ से जोड़कर उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए। मात्र सत्ता से समाज का उत्थान असंभव है जब तक कि परिवर्तन को स्वीकार न किया जाए, समस्या को स्वीकार न किया जाए, समाज की अच्छाइयों का प्रचार–प्रसार एवं बुराइयों को दूर करने का प्रयास न किया जाए, तथा समस्त मानव जाति के कल्याण का काम न किया जाए। व्यक्ति को अपने उत्तरदायित्व का बोध होना अति आवश्यक है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक प्रखर, स्पष्टवादी, निर्भीक व सच्चे समाज सुधारक थे।

तत्पश्चात् कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रो. पी.के. दशोरा ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि बाबा साहेब–समता, ममता एवं समरसता के जीते–जागते उदाहरण हैं। वे बहुआयामी व्यक्तित्व थे एवं समाज उनके द्वारा किए गए सामाजिक सुधार, शिक्षा के प्रचार–प्रसार आदि के कार्यों से कभी उऋणी नहीं हो सकता। उन्होंने संविधान में प्रदत्त अधिकारों की अभिकल्पना की। आज इस बात की आवश्यकता है कि बाबा साहेब के विराट व्यक्तित्व व अमूल्य विचारों को सम्पूर्ण समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रयास किए जाएँ।

कार्यक्रम का संचालन श्री के.के. शर्मा ने किया। कार्यक्रम में 12.04.2018(गुरूवार) को "डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का सामाजिक उत्थान में योगदान" विषय पर हुई निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण–पत्र व पुरस्कार प्रदान किया गया। जिसमें प्रथम स्थान एम.सी.ए. विभाग की शुभ्रा अवस्थी, द्वितीय स्थान शिवानी शर्मा व योगेन्द्र सिंह वर्मा तथा तृतीय स्थान कविता मीणा ने प्राप्त किया। डॉ. एन.एल. हेडा जी ने कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए सबको धन्यवाद ज्ञापित दिया। सभी मंचासीन अतिथियों एवं वक्ताओं को विश्वविद्यालय द्वारा प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।